रात्रि क्लास 11/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

यह है बहुत सहज। बाप को याद करना है। कम कार डे दिल बाबा डे। बच्ची से पूछा। कहती है बाबा ने ही कहा है काम करो और मुझे याद करो। तो मैं काम करती हूँ। क्योंकि बाबा ने कहा है कारपोरेशन में भल काम करो। फिर बाबा कहते हैं काम करो और मुझे याद करो। बाबा ने कहा है यह काम करो। वह कर रहा हूँ और बाबा को याद करता हूँ। यह तो बहुत सहज है। भूलने की भी बात नहीं। बाबा ने कहा है यह काम भी करो वह भी करता हूँ , बाबा को याद भी करता हूँ। इसमें तकलीफ क्या है। दैवीगुण धारण करनी है। कुमारी में दैवीगुण तो है ही। बाकी है आप समान बनाने की सेवा। जब काम करो बाबा को याद करो। बाबा ने कहा है यह काम भूल करो। बाप का पैगाम देना है। चक्र लगाना पड़े। नालेज है बहुत सहज। बहुत सहज है। मन्मनाभव। बाबा ने कहा है काम आद भल करो। मिलिट्री में भल जाओ। भल मारो मरना पड़ेगा। बाबा ने कहा है भले मारो। बाबा याद पड़ेगा ना। प(म)ारना कोई पाप नहीं है। मार बिगर सच्च नहीं करते। तो बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। पतित–पावन वह एक ही है। उनको याद करने से पावन बन सतोप्रधान बन जाते हैं। कई बच्चों में दैवी–गुण बड़े अच्छे हैं। ऐसी–2 बच्चियां बहुत सर्विस कर सकती हैं। समझते हैं पैसे इकट्ठा करता हूँ वह बाबा का ही है। मेरा सभी कुछ बाबा का ही है। सभी वहां ट्रान्सफर हो जाता है। फिर2 जन्म लिए बाबा बहुत दे देते हैं। यह तो बहुत सेफ्टी में है। अलफ माना अल्ला बाबा। बे बादशाही। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देते हैं। थी। अभी नहीं है। फिर बाप कहते हैं अलफ को याद करो तो बादशाही तुम्हारी है। डिफीकल्टी बात ही नहीं। भूलना क्यों चाहिए। आस्ते2 रूहानी बाप की सर्विस करने का शौक बढ़ता जावेगा। फिर समझेंगे हमारा आठ घंटा उसमें जाता है। इससे तो हम बहुतों का कल्याण कर सकते हैं। बहुत प्रजा बनेगी। आगे चल यह भी शौक आवेगा। जब बहुत म्युजियम खुल जावेंगे तो ऐसे2 बच्चियां जिनमें कोई अवगुण नहीं। बहुत अच्छी बच्ची है। आखरीन तो इसी सर्विस में लगनी है। गवर्मेन्ट की सर्विस करते2 फिर भी इस सर्विस में ही लाग जावेंगे। कौरव गवर्मेन्ट की सर्विस से पाण्डव गवर्मेन्ट की सर्विस अच्छी है। उनकी ही विजय है तो बाप कहते हैं भल सर्विस करो। जब बहुत शौक हो। तरस पड़े तब ही इसमें लग जाये। तुम अंधों की लाठी बनते हो। बाप को जानते ही नहीं। अगर जानते भी हैं तो गाली देते हैं। इससे तो न जानना अच्छा। भितर–ठिक्कर में तो न कहे। बच्चे जानते हैं बाप भी बड़ा वन्डरफुल है। युक्तियां बहुत अच्छी बताते हैं। सारी सृष्टि का समाचार, रचना का समाचार पूरा सुनाते हैं। जो बुद्धि में बैठ जाता है। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। मनुष्य तो अपन को कोई कह न सके। मनुष्य समझते स्वदर्शनचक्र विष्णु को है। अथवा कृष्ण को , नारायण को भी देते हैं। बच्चे जानते हैं स्वदर्शनचक्र तो हमको है। इस चक्र को फिराने से विकर्म विनाश होते हैं। रावण का गला कटता है। 5 विकारों रूपी रावण पर जीत पाते हो। तुम बच्चों को हिंसा का काम तो करना ही नहीं है। बाप समझाते हैं स्वदर्शनचक्र धारी बनने से रावण से छूट जावेंगे। दिखाते हैं कुमारी ने बाण मारा। कुमारियों में ज्ञान था ना। तो ज्ञान दिया था। बाण मारने की बात नहीं। तुम बहुत अहिंसक बनते हो। कोई को भी दुःख नहीं देने वाले हो। बाबा समझते हैं यह बच्ची कब किसको दुःख नहीं देती होगी। आगे जब बढ़ेगी और ज्ञान तरफ चाहिए। समझेगी वह तो टाईम वेस्ट होता है। हम तो बाबा से क्यों नहीं 21 जन्म का वरसा लेंवे। नौकरी करते2 प्राण निकल जाये तो क्या। शरीर पर तो भरोसा नहीं है। तो फिर शौक से सर्विस में लग जाना चाहिए। आगे चल ऐसे2 इतफाक होंगे। परन्तु जब तक तुम्हारा राज्य स्थापन न हुआ है तो ठंढी हो जावेंगी। रिहर्लसल जरूर होनी चाहिए। मनुष्य मरते हैं। तो निश्चय भी हो और बाप की सर्विस में लग जाये। सर्विस बहुत है। जितना2 जो सर्विस करेंगे उनको ऊँच पद जरूर मिलेगा। यह बचार(विचार)–सागर–मंथन चलता है जो सर्विस करते रहते हैं। अवस्था ऐसी जमानी चाहिए जो अन्त में शिवबाबा के सिवाय और कोई याद न पड़े और शरीर छूटे तो बहुत ऊँच पद पा सकते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।